ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

ही सभी क्रांतिकार नीचे उतर आए और अपने–अपने निश्चित कार्य पर जुट गए और 10 मिनट में ही ट्रेन को लूट लिया गया इस लूट में लगभग 5 हजार रूपया मिला। काकोरी ट्रे डकैती भारत में अपने ढंग की अपनी अनोखी घटना थी।

इसके बाद काकोरी षड्यंत्र के सिलसिले में शाहजहाँपर में रामप्रसाद रोशन सिंह, प्रेमकृष्ण खभ, इन्द्रभूषण मित्र, बनारसी लाल तथा हरगोविन्द गिरफ्तार किए गए। गोविन्द चरण और राचीन्द्रनाथ विश्वास लखनऊ में पकड़े गए। भूपेन्द्रनाथ सान्याल और रामदुलारे त्रिवेदी इलाहाबाद, राजकुमार सिन्हा और सुरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य कानपुर, मन्मथनाथ गुप्त और रामनाथ पाण्डेय बनारस तथा रामकृष्ण खत्री पूना, मुकुन्दीलाल औरैया तथा प्रणेवश चटर्जी जबलपुर में गिरफ्तार हुए। इसके तीन महीने बाद राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी दक्षिणेश्वर भवन (कलकत्ता) में गिरफ्तार किए गए। लगभग 15 महीने बाद शचीन्द्रनाथ बक्शी भागलपुर में पकड़े गए व अशफाक उल्लाह खां दिल्ली में गिरफ्तार क्रांतिकारियों पर मुकदमा चलाने के लिए उनके विरूद्ध प्रमाण जुटाने शुरू कर दिए गए। यह मुकदमा काकोरी कास्पेंरेंसी केस के नाम से विख्यात हुआ।

6 अप्रैल 1927 को सेशन जज है मिल्टन ने मुकदमें का फैसला सुनाया। रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह को फांसी की सजा हुई। शचीन्द्रनाथ सान्याल को आजीवन कारावास और मन्मथनाथ गुप्त को 14 वर्ष की सजा सुनाई गयी। योगेश चन्द्र चटर्जी, मुकुन्दी लाल, गोविन्दचरण कर, राजकुमार सिन्हा व रामकृष्ण खत्री को 10,10 वर्ष की सजा हुई। विष्णु शरण दुबलिश और सुरेन्द्रचन्द्र भट्टाचार्य को 7, 7 साल भूपेन्द्रनाथ सान्याल, रामदुलारे त्रिवेदी और प्रेमकृष्ण खन्ना को 5, 5 वर्ष, प्रणवेश कुमार चटर्जी को 4 वर्ष तथा रामनाथ पाण्डेय को तीन वर्ष की सजा दी गई।

इसके तुरन्त बाद स्पेशल जज जे0आर0 डब्लू0 बैनेट ने 13 जुलाई 1927 को अशफाक उल्लाह खां को फांसी तभि शचीन्द्रनाथ बख्शी को आजीवन कारावास की सजा दी।

17 दिसम्बर 1927 को गोंडा के जले में राजेन्द्र लाहिड़ी को फांसी दे दी गई। रामप्रसाद बिल्सिमल को इसी क्रम में 19 दिसम्बर 1927 ई0 को गोरखपुर जेल में फांसी दी गई। इस समय उनकी उम्र मात्र 28 वर्ष थी। रामप्रसाद बिस्मिल यह कहते हुए फांसी पर झूल गए।

सरफरोशी की तमना अब हमारे दिल में हैं।
देखना है जोर कितना बाजुएं कातिल में है।।
अब न अगले बदलते है और न अरमानो की भीड़।
एक मिट जाने की हसरज बस दिले बिस्मिल में हैं।।
आज तकतब में यह कातिल कह रहा है बार–बार।।
ये शहीदे मुल्कों मिल्लत, मै तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गेर की महफिर में है।।

1. युद्ध के पश्चात् मजदूर तथा श्रमिक संघवाद का उदय, क्रांतिकारी आतंकवादी नए उभरते हुए वर्ग की क्रांतिकारी ऊर्जा को राष्ट्रवादी क्रांति में लगाना चाहते थे।
2. 1917 की रूसी क्रांति तथा युवा सोवियत राज्य का गठन।
3. नये साम्यवादी समूहों का उदय; ये मार्क्सवादी, समाजवादी एवं दरिद्रतम श्रमिक वर्ग के हितों के पक्षधर थे।
4. क्रांतिकारियों द्वारा प्रकाशित विभिन्न पुस्तकें एवं पत्र–पत्रिकायें, इनमें विभिन्न क्रान्तिकारियो के त्याग एवं बलिदान का गुणगान किया गया। इसमें आत्मशक्ति, सारथी एवं बिजली का नाम उल्लेखनीय हैं।
5. उपन्यास एवं पुस्तकें जैसे– सचिव सान्याल की बन्दी जीवन तथा शरदचन्द्र चटर्जी द्वारा लिखित पाथेर दाबी प्रमुख थी। (बाद में अत्यधिक लोकप्रिय होने के कारण सरकार ने पाथेर दाबी प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया)।

अक्टूबर 1924 में अखिल भारतीय संगठन होने के उत्तम परिणाम निकल सकते है इसलिए क्रांतिकारी दलों का कानपुर में एक सम्मेलन बुलाया गया तथा इस क्षेत्र में क्रांतिकारी आतंकवादी गतिविधियों का संचालन मुख्य रूप से हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन या आर्मी ने किया।

''कानपुर में बुलाये गये सम्मेलन में जिसमें सचिन्द्रनाथ सान्याल, जगदीश चन्द्र चटर्जी तथा रामप्रसाद बिस्मिल जैसे– प्राचीन क्रांतिकारी नेताओं तथा भगत सिंह, शिव वर्मा, सुखदेव, भागवतीचरण वोहरा तथा चन्द्रशेखर आजाद जैसे तरूण नेताओं ने भाग लिया। इसके फलस्वरूप 1928 में भारत गणतन्त्र यमिति अथवा सेना (Hindustan Republican Association o Army) का जन्म हुआ तथा बंगाल, बिहार, यू0पी0, दिल्ली, बिहार, पंजाब, मद्रास जैसे प्रान्तों में शाखाएं स्थापित की गयी।''[1]

''काकोरी काण्ड''
(अगस्त 1925)

8 अगस्त 1925 को क्रांतिकारियों ने ट्रेने डकैती की येाजना बनाई किन्तु उस दिन उनके स्टेशन पहुंचने से पूर्व ही ट्रेन जा चुकी थी अतः उल्टे पांव उन्हें लखनऊ लौटना पड़ा। 9 अगस्त को पुनः दूसरी योजना बनी निश्चय हुआ कि लखनऊ से पश्चिम की ओर जाने वाली किसी गाड़ी से अगले स्टेशन पर पहुँचा जाये और वही से 8 डाउन पैसेन्जर गाड़ी पकड जाये। योजना अनुसार क्रांतिकारी काकोरी स्टेशनर से ट्रेन पर सवार हुए, अशफाकउल्ला खां, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, शचीन्द्रनाथ बक्शी तृतीय श्रेणी के डिब्बे में चढ़े शेष सात रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, मन्मथनाथ गुप्त, केशव चक्रवर्ती, मुरारीलाल, मुकुन्दीलाल और बनवारी लाल तृतीय श्रेणी के डिब्बों में चढ़े। सायंकाल लगभग 7.15 बजे ट्रेन काकोरी से लखनऊ की ओर ली। अभी 1 से डेढ़ मील की दूरी तय की होगी तभी द्वितीय श्रेणी में सवार क्रांतिकारियों ने जंजीर खींच कर गाड़ी रोक दी, गाड़ी रूकते

[1] ग्रोवर, बी–एल0, 'आधुनिक भारत का इतिहास' पृ0 313

मंडलो का बहिष्कार किया गया। जगह–जगह लोगों ने विदेषी कपड़ों की होली जलाई। 1920 से 1922 के बीच विदेषी कपड़ों के आयात में भारी गिरावट आ गई। परन्तु यह तो आने वाले तूफान की सिर्फ एक झलक थी। देष के ज्यादातर हिस्से एक भारी विद्रोह के मुहाने पर खडे थे।''[1]

''क्रांतिकारियों को आम माफी देकर रिहा करने का मुख्य उद्देश्य यह था कि सरकार मांटेग्यू–चेम्सफोर्ड सुधारों को लागू करने के लिए देष में सहभावना का वातावरण बनाना चाहती थी। शीघ्र ही गांधी जी ने असहयोग आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। इसके पश्चात् गाँधी जी, सी0आर0 दास तथा अन्य नेताओं की अपील जेल से रिहा क्रांतिकारियों में से अधिकांश असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हो गये तथा अन्य ने अहिंसक असहयोग आंदोलन को समर्थन देने के निमित्त आतंकवाद का रास्ता छोड़ दिया।''

लेकिन गाँधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन को एकाएक स्थगित कर दिए जाने के कारण इनमें से अनेक अत्यधिक असंतुष्ट हो गये। जन आंदोलन की आंधी में सब कुछ छोड़कर असहयोग आंदोलन से जुड़ जाने के कारण वे महसूस करने लगे कि उनके साथ विश्वासघात किया गया है। इसमें से अधिकांश ने राष्ट्रीय नेतृत्व की रणनीति तथा अहिंसा के सिद्धान्त पर प्रश्न चिन्ह लगाना प्रारम्भ कर दिया तथा किसी विकल्प की तलाश करने लगे। स्वराधिकयों के संसदीय संघर्ष तथा परिवर्तन विरोधियों (नो पेंजर्स) के रचनात्मक कार्य भी इन युवाओं को आकृष्ट नहीं कर सके। इनमें से अधिकांश इस बात पर विश्वास करने लगे कि सिर्फ हिंसात्मक तरीके से ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार क्रांतिकारी आतंकवाद पुनर्जीवित हो उठा।[1]

''बंगाल में पुरानी अनुशीलन तथा युगान्तर समितियाँ पुनः जाग उठीं तथा उत्तरी भारत के लगभग सभी प्रमुख नगरों में क्रांतिकारी संगठन बन गये परन्तु प्रमुख बात यह थी कि अब यह समझा गया कि एक अखिल भारतीय संगठन होने तथा अधिकतमक उत्तम तालमेल होने से अधिक उत्तम परिणाम निकल सकते है।''[2]

''क्रांतिकारी आतंकवादी विचारधारा के सभी प्रमुख नेताओं ने असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभायी इनमें योगेश चन्द्र चटर्जी, सूर्यसेन, भगतसिंह, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद, शिव वर्मा, भगवती चरण वोहरा, जयदेव कपूर व जतिनदास के नाम सबसे प्रमुख है। इस काल में क्रांतिकारी आतंकवाद की दो विभिन्न धारायें विकसित हुई– एक पंजाब, उत्तर प्रदेष तथा बिहार में तथा दूसरी बंगाल में।''[2]

---

[1] NCERT 8th Class Page-117

[1] अहीर, राजीव, 'आधुनिक भारत का इतिहास' स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली, 2019, पृ0 347

[2] ग्रोवर, बी–एल0, 'आधुनिक भारत का इतिहास' पृ0 313

[2] अहीर, राजीव, 'आधुनिक भारत का इतिहास' स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली, 2019, पृ0 347

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

इस दौर में विदेषों में होने वाली क्रांतिकारी घटनाओं में सिंगापुर में हुए विद्रोह का एक महत्वपूर्ण स्थान है। सिंगापुर में 15 फरवरी 1915 को पंजाबी मुसलमानों की पांचवी लाइट इन्फैन्ट्री तथा 36वीं सिख बटालियन के सैनिक ने जमादार चिश्ती खान, जमादार अब्दुल गनी एवं सूबेदार दाउद खान के नेतृत्व में विद्राहे को कुचल दिया। घटना से सम्बद्ध 37 नेताओं को फांसी तगि 41 को आजीवन कारावास का कठोर दण्ड दिया गया।

इस काल में भारत में होने वाली विभिन्न क्रांतिकारी गतिविधियों के केन्द्र मुख्यतया पंजाब एवं बंगाल रहे। बंगाल में होने वाली विभिन्न घटनाओं में रासबिहारी बोस एवं सचिन सान्याल की मुख्य भूमिका रही। इन दोनों क्रांतिकारियों ने पंजाब औटे गदर दल के नेताओं के सहयोग से अनेक क्रांतिकारी कार्य किये। अगस्त 1914 में बंगाल के क्रांतिकारियों ने कलकत्ता के रेड्डा फर्म के कर्मचारियों की सहानुभूति से इसे लूट लिया तथा 50 माउजर पिस्तौलें एवं लगभग 46 हजार राउंड गोलियाँ लेकर भाग निकले। बंगाल के एक अन्य प्रमुख क्रांतिकारी नेता जतिन मुखर्जी थे, जिनके नेतृत्व में बंगाल के क्रांतिकारियों ने विभिन्न स्थानों पर आतंकी कार्य किये। इनमं रेलवे पटरियों को उखाड़ना, कोर्ट विलियम किले का घेराव तथा जर्मन हथियारों को वितरित करना इत्यादि सम्मिलित थे। किन्तु कमजोर संगठन एवं संयोजन के अभाव में क्रांतिकारियों के अधिकांश प्रयास विफल हो गये। सितम्बर 1915 में उड़ीसा तट पर स्थित बालासोर नामक स्थान पर बाधा (जतिन मुखर्जी) पुलिस के साथ लड़के हुए शहीदों की तरह मारे गये।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् इस क्रांतिकारी गतिविधियों में कुछ समय के लिए थोड़ा विराम आया, जब सरकार ने भारत रक्षा अधिनियम 1915 के तहत पकड़ गये राजनीतिक बंदियों को छोड़ दिया। साथ ही माउंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार 1919 लागू करने से अनुरंजक वातावरण बन गया। इसके अतिरिक्त इसी समय भारतीय राजनीति में गांधी जी एक प्रमुख राष्ट्रीय नेता के रूप में आगे आये। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अहिंसा का सिद्धान्त रखा। इन सभी कारणों से देष में क्रांतिकारी गतिविधियों में धीमापन आ गया।[1]

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान क्रांतिकारी आतंकवाद का निर्ममता से दमन किया गया। अनेक क्रांतिकारी भूमिगत हो गये, कई जेल में डाल दिये गये और कई इधर–उधर हो गये। ''1920 में अंग्रेजों ने कुछ क्रांतिकारियों को आम माफी देकर रिहा कर दिया।''

''1921–22 के दौरान असहयोग आंदोलन को गति मिली। हजारो विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल–कॉंज छोड़ दिए। मोती लाल नेहरू, सी0आर0 दास, सी0आर0 दास, सी0 राजगोपालाचारी और आसफ अली जैसे बहुत सारे वकीलों ने वकालय छोड़ दी। अंग्रेजों द्वारा दी गई उपाधियों को वापस लौटा दिया गया और विधान

[1] अहीर, राजीव, 'आधुनिक भारत का इतिहास', स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली, 20196, पृ0 283, 284, 285, 286, 287, 288

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

यद्यपि गदर आंदोलन अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में असफल रहा, किन्तु उसकी महत्ता इस बात में है कि इसने क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों को धर्मनिरपेक्षता की प्रेरणा दी। इस दल के समर्थकों में विभिन्न सम्प्रदायों के अनुयायी थे तथा सभी ने कंधे से कंधा मिलाकर ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लिया। हालांकि उचित आंकलन, दूरगामी रणनीति, सुदृढ़ संगठन एवं कुशल नेतृत्व के अभाव के कारण यह विफल हो गया, किन्तु कई स्थानों पर इसने अंग्रेजी शासन की चूलें हिला दीं।[1]

इस घटना का राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इस काण्ड ने पंजाब में एक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न कर दी थी। पंजाब के एक क्रांतिकारी बाबा गुरूदित्ता सिंह ने एक जापानी जलपोत 'कामागारा मारु' को भाडे पर लेकर 351 पंजाबी सिक्खों तथा 21 मुसलमानो को सिंगापरु से वैंकूवर ले जाने का प्रयत्न किया। इसका उद्देश्य था कि ये लोग वहाँ जाकर स्वतंत्र व सुखमय सरकार ने इन यात्रियों को बंदरगाह में उतरने की अनुमति नहीं दी और मजबूरन यह जहाज 27 सितम्बर 1914 को पुनः कलकत्ता बंदरगाह लौट आया। इस जहाज के यात्रियों का विश्वास था कि ब्रिटिश सरकार के दबाव के कारण ही कनाड़ा की सरकार ने उन्हे वापस लौटाया है। कलकत्ता पहुँचते ही बाबा गुरुदित्ता सिंह को गिरफ्तार करने का प्रयास किया गया किन्तु वे बच निकले। शेष यात्रियों को जबरन पंजाब जाने वाली ट्रन में बैठाने से इन्कार कर दिया। फलतः पुलिस एवं यात्रियों के बीच हुयी मुठभेड़ में 22 लोग मारे गये। शेष यात्रियों की विशेष रेलगाड़ी द्वारा पंजाब पहुँचा दिया गया। बाद में इनमें से अधिकांश ने अनेक स्थानों पर डाके डाले।

वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, भूपेन्द्रनाथ दत्त, लाला हरदयाल एवं अन्य लोगों ने 1915 में जर्मन विदेष मंत्रालय के सहयोग से 'जिम्मेरमैन योजना' के तहत 'बर्लिन कमेटी फॉर इंडियन इंडिपेंडेंस की स्थापना की। इस क्रांतिकारियों का उद्देश्य विदेषी में रह रहे भारतीयों को ब्रिटिश शासन के विरूद्ध संगइित करना तथा अप्रवासी भारतीयों को भारत जाकर क्रांतिकारी गतिविधियों को संचालित करने हेतु प्रेरित करना, हथयारों की आपूर्ति सुनिश्चित करना तथा किसी भी तरह भारत को उपनिवेषी शासन से मुक्ति दिलाना था।'

यूरोप स्थित भारतीय क्रांतिकारियों ने विश्व के विभिन्न भागों यथा–बगदाद, ईरान, तुर्की एवं काबुल में अनेक क्रांतिकारियों को भारतीय सेनाओं एवं भारतीय युद्ध बंदियों के मध्य कार्य करने के लिए भेजा। इनका कार्य भारतीय सैनकों एवं विश्व के विभिन्न भागों में रह रहे भारतीयों के मन में ब्रिटिश विरोधी भावनायें जागृत करना था। इसी प्रकार का एक शिष्टमंडल राजा महेन्द्र प्रताप सिंह, बरकतउल्ला एवं ओबैदुल्ला सिंधी के नेतृत्व में काबुल गया, जहाँ उसने युवराज अमानुल्ला के सहयोग से 'अस्थायी भारतीय शासन' की स्थापना करने का प्रयास किया।

[1] एस0सी0 इसमोंगर और जे0 सेलटरीः ऐन एकाउन्ट ऑफ गदर कांस्पेरेंसी (लाहौर, 1919), पृ0–105

जानकारी मिल गयी तथा सरकार ने भारत रक्षा अधिनियम 1915 के तहत तुरन्त कार्यवाही की। संदिग्ध सैनिक रेजीडेंटों को भंग कर दिया गया, विद्रोही नेताआं को गिरफ्तार कर लिया गया तथा देष से निर्वासित कर दिया गया। विद्रोहियों में से 45 पर मुकदमा चलाकर उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई। रास बिहारी बोस जापान भाग गये (जहाँ से अंबानी मुखर्जी के साथ वे क्रांतिकारी गतिविधियाँ चलाते रहे तथा कई बार उन्होंने भारत में हथियार भेजने का प्रयास किया) तथा सचिन सान्याल को देष से निर्वासित कर दिया गया।

ब्रिटिश सरकार ने प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान हो रही क्रांतिकारी गतिविधियों को कुचलने के लिये उसी प्रकार के दमन का सहारा लिया जैसा कि उसने 1857 के विद्रोह के समय लिया था। सरकार पहले ही क्रांतिकारियों एवं राष्ट्रवासियों को कुचलने के लिए अनेक कानून बना चुकी थी। भिन्न–भिन्न अधिनियमों को मिलकर 1915 में भारत रक्षा अधिनियम बनाया गया। किन्तु इस अधिनियम का सबसे मुख्य उद्देश्य गदर आंदोलन को कुचलना था। इस अधिनियम द्वारा सरकार ने व्यापक पैमाने पर गिरफ्तारियाँ की, विशेष रूप से गठित आदालतों ने सैकड़ों लोगों को फांसी की सजा सुनायी तथा विद्रोही सैनिकों को सैन्य न्यायालयों द्वारा कड़ी सजायें दी गयीं। पंजाब जो कि गदर आंदोलन का गढ़ समझा जाता था, यहाँ अनेक लोगों का दमन किया गया। सरकार ने अपने कुचक्र में बंगाली उग्रवादियों को भी कड़ी सजायें दीं।

गदर आंदोलन को अपने उद्देश्यों के कार्यान्वयन हेतु हथियार, धन, प्रशिक्षण एवं समयानुकूल योग्य नेतृत्व की आवश्यकता थी किन्तु, दुर्भाग्यवश इनमें से सभी आवश्यकतायें पूर्ण न हो सकीं। गदर दल के समर्थकों को आभास नहीं था कि प्रथम विश्वयुद्ध इतना शीघ्र प्रारम्भ हो जायेगा। प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो ही गदर आंदोलनकारियों ने अपनी शक्ति और संगठन का आकलन किये बिना ब्रिटिश शासन के विरूद्ध सशस्त्र विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। गदर आंदोलन का अभियान मुख्यतया क्रुद्ध एवं असुंष्ट अप्रवासी भारतीयों पर निर्भर था, जो श्वेत वर्गीय–ब्रिटिश शासन से पीड़ित थे। किन्तु आंदोलनकारियों ने भारतीय जनमानस में अपनी पैठ जमाने का कोई विषेष प्रयास नहीं किया। वे भारतीय समुदाय को उचित समय पर संगठित भी नहीं कर सके। आदोलनकारी विशालकाय ब्रिटिश शासन की वास्तविक शक्ति का आंकलन नहीं लगा सके तथा यह मिथ्या अवधारणा को पाले रहे कि भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध पूर्ण माहौल तैयार हो चुका है तथा इसमें केवल चिन्गारी लगाने की आवश्यकता है। आन्दोलनकारियों में निरन्तरता प्रदान करने वाले तथा विभिन्न पहलुओं में साम्य स्थापित करने वाले नेतृत्व का अभाव रहा। यद्यपि इन्होंने भारतीयों को सशस्त्र राष्ट्रवाद की शिक्षा तो दी, किन्तु उसका समयानुकूल प्रयोग नहीं सिखा सके। लाला हरदयाल विभिन्न विचारधाराओं के अच्छे सम्मिश्रक एवं प्रचारक थे, किन्तु उनमें कुशल नेतृत्व एवं सांगठनिक सामर्थ्य का अभाव था। उनके असमय अमेरिका छोड़ने से आंदोलन पर अत्यन्त बुरा प्रभाव पड़ा तथा वह नेतृत्वविहीन हो गया और उसका संगठन भी बिखर गया।

क्रांतिकारी और साम्राज्यवाद विरोधी साहित्य का प्रकाशन, विदेषों में नियुक्त भारतीय सैनिको के मध्य कार्य करना तथा उनमें ब्रिटेन विरोधी भावनायें जगाना, हथियार प्राप्त करना, भारतीय क्रांतिकारियों के मध्य उन्हें वितरित करना तथा एक–एक करके सभी ब्रिटिश उपनिवेशों में विद्रोह प्रारम्भ करना था। गदर दल की गतिविधियों में लालाहरदयाल की भूमिका सबसे प्रमुख थी। इसके अतिरिक्त रामचन्द्र, भगवान सिंह, करतार सिंह सराबा, बरकतउल्ला तथा भाई परमानन्द भी गद दल के प्रमुख सदस्यों में से थे। इन भी ने भारत में स्वतंत्रता की स्थापना को अपना मुख्य लक्ष्य घोषित किया। 1913 में गदर दल की स्थापना के पश्चात् जैसे ही इसकी गतिविधियाँ प्रारम्भ हुई, दो अन्य घटनाओं ने इसमें उत्प्रेरक की भूमिका निभायी। ये घटनाये थीं–कामागाटा मारू प्रकरण एवं प्रथम विश्वयुद्ध का प्रारम्भ होना।

इस घटना का राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इस काण्ड ने पंजाब में एक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न कर दी थी। पंजाब के एक क्रांतिकारी बाबा गुरूदित्ता सिंह ने एक जापानी जलपोत 'कामागारा मारु' को भाडे पर लेकर 351 पंजाबी सिक्खों तथा 21 मुसलमानो को सिंगापरु से वैंकूवर ले जाने का प्रयत्न किया। इसका उद्देश्य था कि ये लोग वहाँ जाकर स्वतंत्र व सुखमय सरकार ने इन यात्रियों को बंदरगाह में उतरने की अनुमति नहीं दी और मजबूरन यह जहाज 27 सितम्बर 1914 को पुनः कलकत्ता बंदरगाह लौट आया। इस जहाज के यात्रियों का विश्वास था कि ब्रिटिश सरकार के दबाव के कारण ही कनाड़ा की सरकार ने उन्हे वापस लौटाया है। कलकत्ता पहुँचते ही बाबा गुरुदित्ता सिंह को गिरफ्तार करने का प्रयास किया गया किन्तु वे बच निकले। शेष यात्रियों को जबरन पंजाब जाने वाली ट्रन में बैठाने से इन्कार कर दिया। फलतः पुलिस एवं यात्रियों के बीच हुयी मुठभेड़ में 22 लोग मारे गये। शेष यात्रियों की विषेष रेलगाड़ी द्वारा पंजाब पहुँचा दिया गया। बाद में इनमें से अधिकांश ने अअनेक स्थानों पर डाके डाले।

कामागाटा मारु घटना एवं प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्भ होने से गदर दल के नेता अत्यधिक उत्तेजित हो गये तथा उन्होंने भारत में शासन कर रहे अंग्रेजों पर हिंसक आक्रमण करने की योजना बनायी। उन्होंने विदेषो में रह रहे क्रांतिकारियों से भारत जाकर ब्रिटिश सरकार से लोहा लेने का आह्वान किया। इन क्रांतिकारियों ने धन एकत्रित करके अनेक स्थानों पर राजनैतिक डकैतियां डाली। जनवरी–फरवरी 1915 में पंजाब में हुई राजनैतिक डकैतियों के महत्वपूर्ण प्रभाव हुए। इन डकैतियों की वास्तविक मंशा कुछ भिन्न नजर आयी। पाँच में से तीन घटनाआं में छापामारो ने अपना प्रमुख निराशा जमीदारों को बनाया तथा उनके ऋण सम्बन्धी कागजातों को विनष्ट कर दिया। इस प्रकार इन घटनाओं ने पंजाब में स्थिति अत्यन्त विस्फोटक एवं तनावपूर्ण बना दी। 21 फरवरी 1915 का गदर दल के कार्यकर्ताओं ने फिरोजपुर, लाहौर एवं रावलपिंड़ी में सशस्त्र विद्रोह की योजना बनायी। विदेषों में रहने वाले हजारो भारतीय भारत आने के लिए इकट्ठा हुये। विभिन्न स्त्रोतों से धन इकट्ठा किया गया। कई भारतीय सैनिकों की रेजीमेंटों को विद्रोह करने के लिये तैयार भी कर लिया गया। किन्तु दुर्भाग्यवश ब्रिटिश अधिकारियों को इस विद्रोह की

का प्रकाशन सन् 1857 ई0 में हुए विद्रोह की स्मृति में किया गया। यह पत्र अंग्रेजी, उर्दू, मराठी तथा पंजाबी में प्रकाशित किया गया। इसी पत्र के नाम पर 'हिंद एसोसिएशन ऑफ अमेरिका' का नाम 'गदर पार्टी' पड़ा। इस संगठन द्वारा सैन फ्रांसिस्को में युगान्तर आश्रम का नामकरण कलकत्ता से प्रकाशित सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी पत्रिका 'युगांतर' के नाम पर किया गया था।

प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ होने पर इंग्लैण्ड तथा जर्मनी के सम्बन्ध तनावपूर्ण हो गये, फलतः क्रांतिकारियों ने जर्मनी को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बना लिया। लाला हरदयाल तथा उसके साथी अमेरिका से जर्मनी आ गयें वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने बर्लिन को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बना लिया।

जर्मनी में भारतीय स्वतंत्रता को जलाये रखने का श्रेय मैडम भकाजी कामा और लाला हरदयाल गदर आंदोलन पर प्रतिबंध लगने के बाद और प्रथम महायुद्ध के आरम्भ होने पर अमेरिका से जर्मनी चले आये और यहाँ भारतीय स्वतंत्रता समिति की स्थापना की थी। र्जन सरकार और क्रांतिकारियों के विचार विमर्श के स्वरूप जिमर मेन योजना तैयार की गई थी। इस योजना के महत हरदयाल ने 1916 में बर्लिन में भारतीय स्वतंत्रता समिति की स्थापना की थी। एस0एस0 राणा, के0आर0 बनेतवाल और एम0पी0टी0 आचार्य इस समिति के सहयोगी सदस्य थे। उनका उद्देश्य था कि विदेष में रहने वाले भारतीयों को भारत की स्वतंत्रता के लिए सभी प्रकार के प्रयत्न करने चाहिए। जैसे भारत में स्वयंसेवको को भेजकर भारतीय सैनकों को विद्रोह के लिए तैयार करना। भारतीय क्रांतिकारियों के लिए विस्फोटक पदार्थ भेजना। यदि संभव हो तो भारत का सैनिक आक्रमण करना इत्यादि। भारतीय स्वतंत्रता समिति के प्रथम अध्यक्ष मंसूर अहमद थे।

गदर आंदोलन, गदर दल द्वारा चलाया गया, जिसका गठन 1 नवम्बर 1913 को संयुक्त राज्य अमेरिका के सैन फ्रांसिस्कों में गदर दल का मुख्यालय तथा अमेरिका के कई शहरों में इसकी शाखायें खोली गयीं। यह एक क्रांतिकारी संस्था थी, जिसने 1857 के विद्रोह की स्मृति में गदर नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। गदर दल के कार्यकर्ताओं में मुख्यतया पंजाब के किसान एवं भूतपूर्व सैनिक थे, जो रोजगार की तलाश में कनाड़ा एवं अमेरिका के विभिन्न भागों में बसे हुए थे। अमेरिका एवं कनाड़ा के विभिन्न शहरों के अतिरिक्त पश्चिमी तट में भी उनकी संख्या काफभ अधिक थी। गदर दल की स्थापना के पूर्व ही यहाँ ब्रिटेन विरोधी क्रांतिकारी गतिविधियाँ प्रारम्भ हो चुकी थीं। इसमें रामदास पुरी, जी0डी0 कुमार, तारक नाथ दास एवं सोहन सिंह भखना की मुख्य भूमिका थी। 1911 में लाला हरदयाल के पहुंचने पर इनमें और तेजी आ गयी। इन सभी के प्रयत्नों से 1913 में गदर दल की स्थापना की गयी। इससे पूर्व क्रांतिकारी गतिविधियों के संचालन हेतु वैंकूवर (कनाड़ा) में 'स्वदेषी सेवक गृह' एवं सिएटल में 'यूनाइटेड इंडिया हाउस' की स्थापना की जा चुकी थी। इन दोनों संस्थाओं का उद्देश्य भी क्रांतिकारी गतिविध्यिों की सहायता से भारत को विदेषी दासता में मुक्त करना था। विदेषों से ब्रिटेन विरोधी क्रांतिकारी गतिविधियों के संचालन में गदर दल की मुख्य भूमिका थी। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य अंग्रेज अधिकारियों की हत्या करना,

राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों ने विदेषों में – ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, अफगानिस्तान, जर्मनी, पेरिस आदि देषों में अन्य क्रांतिकारियों से संपर्क सीापित करने, भारत की स्वतंत्रता के विषय में वैध प्रचार करने तथा विदेशियों से सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से अनेक संगठनों की स्थापना की। क्रांतिकारियों ने भारत के अलावा विदेषों में भी कई स्थानों पर क्रांतिकारी गतिविधियों को जारी रखा। इनमें से कुछ स्थान/देष निम्नानुसार है–

लंदन में क्रांतिकारी गतिविधियों का नेतृत्व मुख्यतया श्यामाजी कृष्णवर्मा, विनायक दामोदर सावरकर, मदन लाल ढ़ींगरा एवं लालाहरदयाल ने किया। श्यामाजी कृष्ण वर्मा ने 1905 में यहीं 'इण्डिया हाउस' के नाम से जाना जाता था। इस संस्था का उद्देश्य अंग्रेज सरकार को आतंकित कर स्वराज्य प्राप्त करना था। यहाँ से एक समाचार पत्र सोशियोलाजिक का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया। लंदन से सरकारी दमन के कारण श्यामाजी पेरिस तथा अंततः जिनेवा चले गये। श्यामाजी कृष्ण वर्मा के पश्चात 'इण्डिया हाउस' का कार्यभार विनायक दामोदर सावरकर ने संभाला। यहीं सावरकर ने '1857 का स्वतंत्रता संग्राम' नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी। उन्होंने मैजिनी की आत्मकथा का मराठी में अनुवाद भी किया। 1909 में मदनलाल ढ़ींगरा ने 'कर्नल विलियम कर्जन वाइली' की हत्या कर दी। ढींगरा को भी गिरफ्तार कर फांसी पर चढ़ा दिया गया। 13 मार्च 1910 को 'नासिक षड़यंत्र केस' में सावरकर को भी गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन्हे काले पानी की सजा दी गयी।

पारसी समुदाय की महिला मैड़म भकाजी रूस्तम कामा ने ब्रिटिश शासन के विरूद्ध अमेरिका तथा यूरोप के विभिन्न देषों में क्रांतिकारी विचार धारा का प्रचार किया। इन्होंने स्टर्टगार्ट (जर्मनी) में अगस्त 1907 में हुए। अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांफ्रेंस में भाग लिया तथा वहाँ पर भारत का राष्ट्रीय तिरंगा (हरा, पीला, लाल) ध्वज फहराया। मैडम भीकाजी कामा को 'मदर ऑफ इंडियन रिवोल्यूशन के नाम से भी जाना जाता है।'

फ्रांस में श्री एस0आर0 राणा एवं श्रीमती भीकाजी रूस्तम कामा ने पेरिस से क्रांतिकारी गतिविध्यिों को जारी रखा। 1906 में शमाजी कृष्ण वर्मा भी लंदन से यहाँ पहुँच गये, जिससे इसकी गतिविधियाँ और तेज हो गयी। इन्होंने यहाँ वंदेमातरम नामक समाचार पत्र निकालने का प्रयास भी किया। यहाँ एस0आर0 राणा ने भारतीय छात्रों हेतु छात्रवृत्तियाँ प्रारम्भ की लेकिन प्रथम विश्वयुद्ध के समय फ्रांस एवं इंग्लैण्ड में मित्रता हो जाने के कारण क्रांतिकारियों की गतिविधियाँ धीमी पड़ गयी।

संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाड़ा में 196वीं शताब्दी के अंतिम दशक में बसे भारतीयों ने ब्रिटिश शासन विरोधी राष्ट्रवादी गतिविधियों का प्रारम्भ 1906 ई0 के आस–पास शुरू किया। सन् 1907 ई0 में अमेरिका में बसे एक प्रवासी भारतीय तारकनाथ दास द्वारा 'कैलिफोर्निया' में भारतीय में भारतीय स्वंत्रता लीग का गठन किया गया। उन्होनें 1908 ई0 में 'स्वतंत्र हिन्दुस्तान' नामक समाचार पत्र भी प्रकाशित किया। इसके परिणमस्वरूप 1913 में 'हिन्द एसोसिएशन ऑफ अमेरिका' की स्थापना सोहन सिंह भाखना द्वारा की गई तथा 'गदर' नामक साप्ताहिक पत्रिका

पश्चात भी उन्होंने अपने सहयोगियों तथा–सूफी अम्बा प्रसाद, भाई परमानंद एवं लाला हरदयाल इत्यादि के सहयोग से क्रांतिकारी गतिविधियों को जारी रखा।[1]
दिल्ली में क्रांतिकारी गतिविधियों की स्पष्ट अभिव्यक्ति तब हुई जब क्रांतिकारियों ने 23 दिसम्बर 1912 को वायसराय लार्ड हार्डिंग के काफिले पर बम फेंका। इस बम हमले में हार्डिंग के कई सेवक मारे गये तथा वे बुरी तरह घायल हो गये। इस घटनामें रासबिहारी बोस तथा सचिन सन्याल की मुख्य भूमिका थी। घटना के पश्चात पुलिस ने 13 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया, जिनमें मास्टर अमीर चन्द्र, अवध बिहारी, दीनानाथ, सुल्तान चन्द्र, हनुमंत सहाय, बसंत कुमार, बालमुकुंद, एवं बलराज इत्यादि शामिल थे। इन सभी पर 'दिल्ली षड्यंत्र केस' के नाम से मुकदमा चलाया गया। इनमें से कुछ को फांसी दी गयी तथा शेष को देष से निर्वासित कर दिया गया।[2]

मद्रास में भी क्रांतिकारी आंदोलन का सूत्रपात हुआ। विपिचन्द्र पाल ने 1907 में मद्रास का दौरा कर अपने विचारों का प्रचार किया। अरविंद घोष के विरूद्ध गवाही न देने के कारण उन्हें 6 माह का दण्ड दिया गया। कारावास में छूटने पर उसके सम्मान में स्थानीय क्रांतिकारी नेता सुब्रहाण्यमं शिव एवं चिदम्बरम पिल्ले ने स्वागत का आयोजन किया। फलस्वरूप इन दोनों को 12 मार्च 1909 को बंदी बना लिया गया, इसकी प्रतिक्रिया टिनेवली में उपद्रव के रूप में हुई। शासन ने समाचार पत्र के संपादको एवं आंदोलनकारी नेताओं को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया। इससे जनता में उत्तेजना फैल गई। क्रांतिकारी संगठित होने लगे। उन्होंने सरकारी संपत्ति को हानि पहुँचाया और पुलिस चौकी एवं थानो पर हमले किये गये। शसन का दमनचक्र शुरू हो गया। नवयुवको में उत्तेजना जागृत हुई। एम0 पीतिहल आचार्य एवं बी0बी0एस0 नय्यर उनके प्रेरणास्रोत थे। 17 जून 1911 को टिनेवली के क्रांतिकारियों ने जिला मजिस्ट्रट ऐश की हत्या कर दी गई।

पंजाब में शिक्षित वर्ग इन क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित हुआ। पंजाब सरकार का सुझाव था कि चनाब तथा बारी दोआब नहरी बस्तियों में भूमि कर बढ़ाया जाना चाहिए। अतएव इस प्रदेष की ग्रामीण जनता में बहुत रोष जागा। केन्द्रीय सरकार ने इस विधेयक को जिसे पंजाब विधान परिषद ने पारित कर दिया था, अपने निषेधाधिकार की शक्तियों का प्रयोग करके रद्द कर दिया था, परन्तु इसके साथ ही उन्होंने इस आन्दोलन के दो प्रमुख नेताओ, लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीत सिंह को बन्दी बना लिया ातथा 1818 के रेग्यूलेशन III के अधीन देष से निर्वासित कर दिया। अजीत सिंह 6 माह पश्चात् छोड़ दिए गए तथा वह फ्रांस भाग गए। लालचन्द्र फलक और भाई परमानन्द को भी भिन्न–भिन्न अवधि के लिए जेल दण्ड दिया गया।

दिसम्बर 1912 में लार्ड हार्डिंग की राजयात्रा के समय चांदनी चौक में बम मारा गया। जिससे उनके सेवक मारे गए। बिहार, उड़ीसा तथा यू0पी0 में मुजफ्फरपुर तथा 'निमेज हत्या काण्ड' तथा बनारस में षड्यन्त्र रचे गए यद्यपि शेष प्रान्तों पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ा।[1]

---

[1] अहीर, राजीव, 'आधुनिक भारत का इतिहास' स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली, 2019, पृ0 282
[2] निगम; नन्दकिशोर, 'बलिदान', (चन्द्रशेखर आजाद की रोमांचकारी जीवनी) पृ0 40
[1] ग्रोवर, बी–एल0, 'आधुनिक भारत का इतिहास' पृ0 312

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

व्यक्त किए। इसी प्रकार The Grave Harning नाम की एक लघु पुस्तक (Pamphlet) भी लन्दन में बांटी गई तथा उसकी कुछ प्रतियाँ भारत भेजी गई।

1909 में मदनलाल ढींगरा ने कर्नल विलियम कर्जन वाइली की जो इण्डिया आफिस में राजनैतिक सहायक (A.D.C) थे, गोली मारकर हत्या कर दी।

अंग्रेजी सरकार ने कड़ा रूख अपनाया। मदन लाल ढींगरा पकड़े गए और उन्हे फांसी दी गई। सावरकर को बन्दी बना लिया गया और आजन्म निष्कासन (Transportation for Life) का दण्ड सुनाया गया। श्यामजी ने भी लन्दन छोड़ दिया तथा पैरिस चले गये इस प्रकार इण्डिया हाऊस की गतिविधियाँ बन्द करनी पड़ी।

21 दिसम्बर, 1909 को नासिक के अप्रिय जिला दण्डनायक (District Magistrate) की हत्या कर दी गई। अभिनव भारत सभा के पश्चिमी भारत में दो अन्य काण्ड, नवम्बर 1909 में अहमदाबाद बम काण्ड तथा 1910 में सतारा षड्यन्त्र काण्ड भी हुए।[1]

पंजाब में क्रांतिकारी गतिविधियों के उदय में अनेक तत्वों ने सम्मिलित भूमिका निभायी। इनमें लगातार दो अकालों के बावजूद भू–राजस्व एवं सिंचाई करों में अत्यधिक वृद्धि, जमीदारों द्वारा आरोपित बेगार प्रथा एवं बंगाल की घटनायें प्रमुख हैं। इसके साथ ही लाला लाजपत राय एवं भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह ने भी पंजाब में क्रांतिकारी आतंकवाद के उदय में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लाला लाजपतराय ने अपने समाचार पत्र पंजाबी के माध्यम से पंजाब के लोगों को किसी भी स्थिति में स्वयं के प्रयासों द्वारा उत्पीड़न का विरोध करने हेतु प्रोत्साहित किया। जबकि अजी सिंह ने लाहौर में 'अन्जुमन–ए–मोहिसबान–ए–वतन' नामक क्रांतिकारी समिति का गठन किया तथा भारत माता ने अनेक क्रांतिकारी लेख लिखे तथा लोगों से दमन एवं उत्पीड़न का विरोध करने हेतु आगे आने का आहवान किया। प्रारम्भ में अजीत सिंह एवं उनके समर्थकों ने चिनाब तथा बारी–दोआब नहरी क्षेत्रों के किसानों पर लगाये गये भारी भूमि–राजस्व को वापस लेने हेतु अभियान चलाया किन्तु बाद में उनका रूझान क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर हो गया। लाला लाजपतराय एवं अजीत सिंह के अतिरिक्त आगा हैदर, सैय्यद हैदर राजा, भाई परमानंद एवं प्रसिद्ध उर्दू कवि लालचंद्र 'फलक' ने भी पंजाब में क्रांतिकारी गतिविधियों के उदय एवं प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

पंजाब में क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रारम्भ होते ही सरकार ने इसके दमन के प्रयास शुरू कर दिये तथा मई 1907 में एक कानून बनाकर राजनीतिक सभाओं एवं समितियों पर प्रतिबंध लगा दिया। लाला लाजपतराय को बंदी बनाकर जेल में डाल दिया गया तथा अजीत सिंह निवसिन के पश्चात फ्रांस चले गये लेकिन इसके

[1] ग्रोवर, बी–एल0, 'आधुनिक भारत का इतिहास' पृ0 310, 311

प्रधान श्री रैण्ड थे परन्तु लेफ्टिनेन्ट एयर्स्ट भी अकस्मात मारे गए। इस हत्या की तात्कालिक उत्तेजना का कारण यह था कि प्लेग समिति ने प्लेग ग्रस्त व्यक्तियों के लिए असैनिक धरों में सैनिको को भेजा। तिक ने अपने समाचार पत्र 'मराठा' में इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा था, आजकल नगर पे राज कर रही प्लेग अपने मानवीय रूपान्तरों से अधिक दयालू है। चापेकर बन्धु पकड़े गये, दोषी पाये गये तथा फमांसी पर लटका लिए गए। शासक वर्ग ने अंग्रेजो के विरूद्ध लेख लिखने के लिए तिलक को भी उत्तरदायी ठहराया तथा 18 मास का कड़ा कारावास दिया। यद्यपि समकालीन राष्ट्रवादियों तथा उत्तरकालीन मारतीय इतिहासकारों ने तिलक की ओर से दलीलें दी हैं परन्तु यदि हम न्याय संगत दृष्टि से देखे तो यह स्पष्ट है कि तिलक के लेखों तथा भाषणों ने चापेकर बन्धुओं को हिंसा की प्रेरणा दी। जैसा कि 15 जून, 1897 में 'केसरी' में लिखे इन शब्दों से स्पष्ट है:..... ''श्रीकृष्ण का गीता में यह उपदेष है कि अपने गुरूजनों तथा बन्धुओं की भी हत्या कर दो। यदि कोई व्यक्ति, कर्म फल की इच्छा के बिना अथवा कर्म में लिप्त न होकर, कर्म करता है तो उसे कोई दोष हनीं लगता..... ईश्वर ने विदेशियों को भारत का साम्राज्य ताम्रपत्र पर लिखकर नहीं दिया है..... अपनी दृष्टि को कूप–मण्डूक की नाईं सीमित मत करो..... दण्ड संहिता की परिधि से बाहर आओ तथा श्रीमदभागवद्गीता के उत्तम वातावरण में प्रवेश करो तथा महान् आत्माओं के कार्यो का ध्यान करो।''

कृष्ण वर्मा पश्चिमी भारत के काठियावाड़ प्रदेष के वासी थे। उन्होंने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी तथा बैरिस्टर बने। भारत लौटकर उन्होंने कई रियासतो में काम किया परन्तु अंग्रेज पोलिटिकल रेजिडेंटों के आचरण से दुखी होकर उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने का दृढ़ निश्चय किया तथा अपने कार्यक्षेत्र के लिए लन्दन नगर को चुना। 1905 में कृष्ण वर्मा ने भारत स्वशासन समिति का गठन किया जिसे प्रायः इण्डिया हाऊस की संज्ञा दी जाती थी। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए एक मासिक पत्रिका Indian Sociologist भी आरम्भ की। उन्होंने विदेष आने वाले योग्यता प्राप्त भारतीयों के लिए एक–एक हजार रूपये की 6 फैलोशिप भी आरम्भ की। शीघ्र ही इण्डिया हाउस लन्दन में रहने वाले भारतीयों के लिए आन्दोलन करने का एक केन्द्र बन गया। वी0डी0 सावरकर, हरदयाल और मदनलाल ढींगरा जैसे क्रांतिकारी इसके सदस्य बन गये।

वी0डी0 सावरकर भी जो पूना के फर्ग्यूसन कालिज के एक तरूण स्नातक थे, कृष्ण वर्मा की फैलोशिप का लाभ उठा कर जून 1906 में लन्दन को चल पड़े। उससे पहले सावरकर ने 1904 में नासिक में 'मित्र मेला' नाम की एक संस्था आरम्भ की थी जो कि शीघ्र ही मेजिनी के 'तरूण इटली' के नाम के नमूने पर एक गुप्त सभा 'अभिनव भारत' में परिवर्तित हो गई थी। इन तरूण तथा उत्तेजित युवको ने इण्डिया हाऊस को अंग्रेज विरोधी तथा भारत समर्थक प्रचार का केन्द्र बना लिया। मई 1908 में इण्डिया हाऊस ने 1857 के विद्राह की स्वर्ण जयन्ती मनाने का निश्चय किया। सावरकर ने इस विद्रोह को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा दी। यह विचार उन्होंने अपनी पुस्तक The Indian War of Independence में

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

1908 में मुजफ्फरपुर जिले के न्यायाधीश किंग्सफोर्ड की हत्या करने के उद्देश्य से खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने उनकी गाड़ी पर बम फेंका। मुख्य प्रेसीडेंसी दण्डनायक के रूप में किंग्सफोर्ड ने युवकों को छोटे–छोटे अपराधों के लिए बड़ी–बड़ी सजाये दी थी। लेकिन गलती से बम श्री कैनेड़ी की गाड़ी पर लग गया, जिससे दो महिलाये मारी गयी। इसके पश्चात् प्रफुल्लचाकी एवं खुदीराम बोस पकड़े गये। प्रफुल्लचाकी ने आत्महत्या कर ली तथा खुदीराम बोस पर मुकदमा चलाकर उन्हें फांसी दे दी गयी। सरकार ने मानिकटोला उद्यान एवं कलकत्ता में अवैध हथियारों की तलाशी के लिए अनेक स्थानों पर छापे मारे तथा 34 व्यक्तियों को बंदी बनाया गया। इनमें दो धोष बंधु, अरविन्द तथा वरिन्द्रघोष भी शामिल थे। इन पर 'अलीपुर षड़यंत्र काण्ड' का अभियोग चलाया गया। मुदमें के दिनों में पुलिस डिप्टी सुपरिटेंडेंट, सरकारी प्रॉसीक्यूटर तथा सरकारी गवाह नरेंद्र गोसांई की हत्या कर दी गयी। पुलिनदास के नेतृत्व में ढाका अनुशीलन समिति के सदस्यों ने बारा में डकैती डाली। तत्कालीन अनेक समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में क्रांतिकारियों की इन गतिविधियों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की गयी। बंगाल में संध्या एवं युगान्तर तथा महाराष्ट्र में काल में क्रांतिकारियों के कार्यो को सही बताते हुए उनके समर्थन में अनेक लेख लिखे गये।

अंत में कहा जा सकता है कि क्रांतिकारी गतिविधियाँ, स्वदेषी आन्दोलन की असफलता के पश्चात उदय हुयी तथा इसने तत्कालीन युवा पीढ़ी में राष्ट्रवाद की एक नयी भावना का संचार किया। किन्तु धर्म पर अत्यधिक बल देने के कारण मुसलमानों का समर्थन इसे नहीं मिला तथा मुस्लिम युवाओं ने इसमें भाग नहीं लिया। क्रांतिकारी गतिविधियों का सामाजिक आधार भी ज्यादा व्यापक नहीं था तथा बंगाल में उच्च वर्ग ने ही इसे सबसे ज्यादा समर्थन एवं सहयोग प्रदान किया। संकुचित सामाजिक आधार एवं व्यापक जनसहयोग के अभाव में यह सरकारी दमन को बर्दाश्त नहीं कर सका तथा धीरे–धीरे इसका अस्तित्व समाप्त हो गया।[1] 1918 की विद्रोह समिति की रिपोर्ट में यह कहा था कि भारत मे क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रथम आभास महाराष्ट्र में मिलता है, विशेषकर पूना जिले के चितपावन ब्राह्मणों में। ये ब्राह्मण महाराष्ट्र के शासकों शिवजी तथा शाहू के पेशवाओं के वंशज थे। यह पेशवाओं का ही राज्य था जिसे लार्ड हेस्टिंग्ज के अधीन ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने समाप्त कर दिया था। इन ब्राह्मणों में स्वराज्य के प्रति प्रेम की उग्र भावना बनी रही और इसीलिए इनके मन में असंतोष रहा और पुनः शक्ति प्राप्त करने का स्वप्न बना रहा।

श्री बाल गंगाधर तिलक ने जो स्वयं भी चितपावन ब्राह्मण थे, 1893 में गणपति त्यौहार तथा 1895 में शिवा जी त्यौहार मनाया। इससे महाराष्ट्र के लोगों में स्वराज्य के प्रति कुछ न कुछ प्यार के अंग्रेजां के विरोधी तत्व जागे।

यूरोपियों की प्रथम राजनैतिक हत्या '22 जून 1897' को पूना में हुई, जिसके लिए दो चितपातन ब्राह्मण, दामोदर और बालकृष्ण जिन्हें प्रायः चापेकर बन्धु भी कहा जाता है, उत्तरदायी थे। इस हत्या का निशाना तो पूना में प्लेग समिति के

[1] अहीर, राजीव, 'आधुनिक भारत का इतिहास' स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0लि0 नई दिल्ली, 2019 पृ0नं0 278, 279, 280, 281

राजनीतिक स्वतंत्रता, संस्कृति, सभ्यता एवं नैतिक मूल्यों इत्यादि सभी को विनष्ट कर देगा। इन क्रांतिकारियों का एकमात्र उद्देश्य मातृभूमि को विदेषी दासता से मुक्त करना था।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् भारत एवं विदेषों में क्रांतिकारियों द्वारा किये गये विभिन्न कार्यो को निम्न परिप्रेक्ष्य में देखा जा गये विभिन्न कार्यो को निम्न परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है–

बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन का सूत्रपात भद्रलोक समाज से हुआ। 1870 तक कलकत्ता के छात्रों द्वारा अनेक गुप्त समितियों का गठन किया जा चुका था, किन्तु ये समितियाँ ज्यादा सक्रिय नहीं हो सकी। बंगाल में क्रांतिकारियों का प्रथम गुप्त संगठन अनुशीलन समिति था, जिसका गठन 1902 में किया गया। मिदनापुर में ज्ञानेंद्रनाथ बसु ने इसकी स्थापना की, जबकि कलकत्ता में इसका गठन पी0 मिश्रा ने किया। कलकत्ता की अनुशीलन समिति में जतीन्द्रनाथ बनर्जी एवं बारीन्द्र कुमार घोष जैसे प्रसिद्ध क्रांतिकारी इसके सदस्य थे। किंन्दु अनुशीलन समिति की गतिविधियाँ, अपने अनुयायियों को शारीरिक एवं नैतिक प्रशिक्षण देने तक ही सीमित रही तथा 1908 तक आते–आते यह लगभग निष्क्रिय हो गयी। अप्रैल 1906 में अनुशीलन समिति के दो सदस्यों बारीन्द्र कुमार घोष तथा भूपेन्द्रनाथ दत्ता ने युगांतर नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। इसी समय अनुशीलन समिति के सदस्यों ने कुछ क्रांतिकारी गतिविधियाँ भी सम्पन्न की। 1905–06 तक युगान्तर के अतिरिक्त कई अन्य पत्र–पत्रिकाओं ने भी क्रांकिारी विचारों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, जिनमें संध्या का नाम प्रमुख है। किन्तु बंगाल में क्रांतिकारी विचारधारा के प्रचार–प्रसार में सबसे प्रमुख कार्य युगांतर ने ही किया। उदाहरणार्थ– बरिशाल सम्मेलन के प्रतिनिधियों पर पुलिस द्वारा किये गये अत्याचारों का विरोध करते हुये युगान्तर ने लिखा कि 'समस्या का समाधान लोगों द्वारा ही किया जा सकता है,ख भारत में निवास करने वाले 30 करोड़ लोगों के उपनिवेशी दमन एवं शोषण को रोकने हेतु 60 करोड़ हाथों का उपयोग करना चाहिए, ताकत को ताकत द्वारा ही रोका जा सकता है। युगांतर में कुछ प्रमुख लेखों का संग्रह 'मुक्ति कौन पाये' (मुक्ति किस मार्ग से) नामक पुस्तक में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक में भारतीय सैनिकों से भारतीय क्रांतिकारियों को हथियार देने का आग्रह किया गया।'

रासबिहारी बोस एवं सचिन सन्याल ने दूरदराज के क्षेत्रों यथा पंजाब, दिल्ली एवं संयुक्त प्रान्त में क्रांतिकारी गतिविधियों के विकास हेतु अनेक गुप्त समितियों का गठन किया, जबकि हेमचन्द्र कनूनगो ने राजनीतिक एवं सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु विदेषो की यात्रा की। 1907 में युगांतर समूहों के सदस्यों ने पूर्वी बंगाल के भूतपूर्व अलोकप्रिय लेफ्टिनेंट गवर्नर फुलर, जो 16 अक्टूबर 1905'20 अगस्त 1906 तक पूर्वी बंगाल और असम के लेफ्टिनेंट गवर्नर रहे, की हत्या का असफल प्रयास किया। दिसम्बर 1907 में, रेल की पटरी को उड़ाने का प्रयास किया गया, जिसमें लेफ्टिनेंट–गर्वनर, एंड्रयू फ्रजर यात्रा कर रहे थे।

पिता का नाम 'स्वाधीन' और माता का नाम 'जेलखाना' बताया था। तब से ही चन्द्रशेखर त्रिपाठी, चन्द्रशेखर आजाद के नाम से संबोधित किए जाने लगे।

उग्र–राष्ट्रवाद के विकास के उपोत्पाद के रूप में क्रांतिकारी गतिविधियों की शुरूआत हुई। स्वदेषी एवं बहिष्कार आन्दोलन के मन्द पड़ने के पश्चात्, क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रथम चरण, जो 19174 तक जारी रहा, का तेजी से विकास हुआ।

उदारवादियों के नेतृत्व में आन्दोलन की असफलता के पश्चात युवा राष्ट्रवादियों का मोह भंग हो गया। वे युवा, जिन्होंने इस आन्दोलन में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया था, हताश हो गये तथा अपनी राष्ट्रवादी ऊर्जा की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त मंच की तलाश करने लगे। उग्रवादियों के उग्र तेवर भी क्रांतिकारी गतिविधियों में सहाकय रहे। इनके कार्यकलापों से ऐसे युवा राष्ट्रवादियों को प्रोत्साहन मिला अतिवादियों ने हालांकि अपने अभियान में बड़ी संख्या में युवाओं को सम्मिलित किया तथा उन्हे त्याग करने की प्रेरणा दी, किन्तु वे एक प्रभावी संगठन बनाने या तरूणों की क्रांतिवादी भावनाओं को स्वतंत्रता अभियान हेतु उपयोग करने में असफल रहे। अंततः युवाओं ने स्वतंत्रता प्राप्त के साथ तत्कालीन साधनों को अनुपयुक्त पाया तथा निष्कर्ष निकाला कि यदि उपनिवेशी शासन को समाप्त करना है तो हिंसक तरीके अपनाना आवश्यक है। उन्होंने यूरोपीय प्रशासकों की हत्या करके उनका मनोबल कम करने, प्रशासन को ठप्प करने तथा स्तंत्रता के भारतीय तथा अंग्रेज विरोधियों का समूल नष्ट करने का प्रयत्न किया। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हत्या, डकैती, लूट इत्यादि सभी हिंसक गतिविधयों को उन्होंने वैध माना। क्रांतिकारियों ने निर्णय किया कि अंग्रेजी शासन को समाप्त करने के लिए सभी भारतीयों को हिंसक गतिविधियों में सहयोग करना चाहिये। इसके लिए एक राष्ट्रव्यापी हिंसक आंदोलन चलाया जाये तथा साम्राज्यवादियों एवं उसके समर्थको का दमन किया जाये। क्रांतिकारियों ने रूसी निहिलिस्टो एवं आयरलैंड के क्रांतिकारियों ने रूसी निहिलस्टो एवं आयरलैंड के क्रांतिकारियों से प्रेरणा ली। क्रांतिकारियों के कार्यक्रमों में व्यक्तिगत तौर पर हिंसक कार्य करना, ब्रिटिश अधिकारियों उनके समर्थको एवं सहयोगियों की हत्या करना, डकैती डालकर क्रांतिकारी गतिविधयों के लिए धन एकत्र करना तथा सरकार विरोधी लोगो के सहयोग से सैनिक कार्यवाही करने जैसी गतिविधियाह्म सम्मिलित थीं।

क्रांतिकारी चाहते थे कि हिंसात्मक कार्यो के द्वारा शासको को आतंकित किया जाये तथा भारतीयों के इस भय को दूर किया जाये कि अंग्रेज शक्तिशाली एवं अजेय हैं। इन्होंने राष्ट्रवादी भावनाओं का प्रचार–प्रसार कर भारतीयों से उनके कार्यो में सहयोग करने की अपील की तथा युवाओं से इस कार्य के लिए आगे आने का आहवाहन किया। क्योंकि बड़ी संख्या में अंग्रेजों ने तरूणों का दमन किया था। अतिवादी भी अपने कार्यो से क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकने में सफल नहीं हुए, उल्टे इन्होंने अपने उदय में अप्रत्यक्ष रूप से उत्प्ररक की भूमिका निभायी। क्रांतिकारी, वे प्रेरणा जिसे उदारवादी दल ने लोकप्रिय बनाया था तथा धीमे प्रभाव की नीति, जिसे उग्रवादियों ने अपनाया था, दोनों में विश्वास नहीं रखते थे। क्रांतिकारियों का मानना था कि साम्राज्यवादी शासन भारत की धार्मिक एवं

कमरा, एक चबूतरा व नाम के कई पेड थे। इस समिति के लगभग 20 सदस्य थे जिनमें अधिकतर छात्र ही थे जिसमें शचीन्द्रनाथ सान्याल, जगदीश प्रसभ मुखर्जी, हेमचन्द्र दत्त विनायक राव कापिले, चुन्नीलाला कारमाकर, हिरण्यमण बनर्जी, जितेन्द्र मुखर्जी आदि प्रमुख थे। बंगाल सरकार द्वारा अनुशीलन समिति को अवैध घोषित कर दिये जाने पर शचीन्द्र नाथ सान्याल ने काशी की समिति का नाम बदलकर ''यंग–मैन्स एसोसिएशन'' रख दिया।

बंगाल की क्रांतिधारा को सम्पूर्ण उ0प्र0 में फैलाने की दुष्टि से काशी सबसे उपयुक्त जगह थी एक तो यह स्थान मध्यवर्ती था। दूसरे तीर्थ स्थानों के साथ अनेक स्कूल व कालेजों का केन्द्र था। यहाँ बंगाली भी बहुत बड़ी संख्या में रहे थे इन्हीं कारणों से सान्याल ने काशी को अपना केन्द्र बनाया। इस संगठन का उद्देश्य सदस्यों का मानसिक, नैतिक व शारीरिक विकास करना था किन्तु बनारस षड्यंत्र केस के कमिश्नर के अनुसार उक्त समिति का उद्देश्य राष्ट्रद्रोह का प्रचार करना था। असोसिएशन सामाजिक कार्यो पर भी जोर देता था जिसके सदस्य मदनपुरा में एक विश्वविद्यालय चलाते थे इसके लिए वे धन–संग्रह और स्वयं–सेवकों की भर्ती करते थे। सेन्ट्रल हिन्दू कालेज के कई छात्र सदस्य बनाये गए। शचीन्द्र नाथ सान्याल का क्वीन्स कालेज के छात्रों में भी घनिष्ठ सम्बन्ध था यह एक सुसंगठित संस्था थी और इसका अनुशासन कड़ा था।

इलाहाबाद में शचीन्द्रनाथ को राष्ट्रीय विद्यालय के सहयोग से जो व्यक्ति मिले उनमें बनवारी लाल भी थे। कांग्रेसी कार्यकर्ताओं में केशवदेव मालवीय से उनका परिचय हुआ। मालवीय की मदद से अन्य छात्र युवक भी सम्पर्क में आए और दल की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गई केशवदेव मालवीय का ग्रुप, बनवारी लाल का ग्रुप, नरेन्द्रनाथ बनर्जी उर्फ नोंदू का ग्रुप अलग–अलग कार्य कर रहे थे और एक दूसरे की गतिविधियों को नहीं जानते थे। बनारस का काशी विद्यापीठ क्रांतिकारियों का गढ़ था। मन्मयनाथ गुप्त, प्रणवेश कुमार चटर्जी, चन्द्रशेखर आजाद वहाँ के छात्र थे और दामोदर स्वरूप वहाँ के शिक्षक थे। 1923 में वहाँ मन्मयनाथ गुप्ता 10वी और प्रवणेश चटर्जी 9वीं कक्षा में पढ़ रहे थे। मन्मयनाथ गुप्ता ने ही प्रवणेश चटर्जी को क्रांतिकारी दल में भर्ती किया था। प्रारम्भ में गुप्त ने प्रणवेश का क्रांतिकारी साहित्य पढ़ने को दिया जिसमें मैखिनी और गौरीबाल्ड़ी की जीवनी, बांग्लाय विल्लतवाद, कन्हाई लाल, खुदीराम, ज्योतिन्द्रनाथ आदि पुस्तके मुख्य थी। ये दोनों प्रायः कारमाइर्कल पुस्तकालय बनारस में मिलते थे एक दिन पुस्तकालय में ही मन्मयनाथ गुप्त ने प्रणवेश का योगेश चटर्जी से परिचय कराया था। एक दो महीने बाद राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी से भी उनका परिचय कराया गया।

असहयोग आंदोलन शुरू होने के पूर्ण चन्द्रशेखर तिवारी नामक एक छात्र ने बनारस के एक कुख्यात गुण्डे की मरम्मत की थी फलस्वरूप उस छात्र के साहस से प्रभावित होकर आचार्य नरेन्द्रदेव उन्हें संस्कृत पाठशाला से हटाकर काशी विद्यापीठ ले आए। 1921 के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण चन्द्रशेखर तिवारी गिरफ्तार कर आई0सी0एस0 मजिस्ट्रेट खारेघाट की अदालत में पेश किए गए। जिसका उन्होंने साहसपूर्ण सामना किया, पूँछे जाने पर अपना नाम 'आजाद',

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास

डॉ0 अनिल कुमार मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष इतिहास
वी0एस0एस0डी0 कॉलेज,कानपुर
एवं रवि शंकर गौतम
छात्र इतिहास विभाग
वी0एस0एस0डी0 कालेज, कानपुर

भारत में भारतीय स्वतंत्रता के लिए जो आन्दोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाये गये वे तो महत्वपूर्ण थे ही इसके अलावा एक और वर्ग था। जो भारत माता के चरणों में अपना सब कुछ न्योछावर कर रहा था और वो था क्रान्तिकारी वर्ग। क्रान्तिकारी विचारधारा, क्रियाकलापों और आन्दोलन का एक निष्चत लक्ष्य था 'देष की स्वतंत्रता'। क्रान्तिकारी विचारधारा क्रियाकलापों का एक लम्बा और गौरवपूर्ण इतिहास है। सर्वप्रथम 1857 ई0 में भारतीय जनता ने अंग्रेजी शासन के विरूद्ध एक साहसपूर्ण, लेकिन असफल क्रान्ति की थी। इसके अतिरिक्त 1858–80 के काल में प्रमुख रूप से तीन क्रान्तिकारी सामने आये। बहावी आन्दोलन, कूको का स्वतंत्रता आन्दोलन लेकिन वास्तव में 20वीं सदी में ही क्रान्तिकाकरियों का उत्कर्ष हुआ, जो बंगाल में प्रारम्भ होकर पूरे भारत में फैल गया जिसमें उ0प्र0 प्रमुख था। पूर्वी उत्तर–प्रदेष में क्रान्तिकारी गतिविधियों के प्रारम्भ होने के पूर्व ही महाराष्ट्र व बंगाल व शेष उ0प्र0 में क्रान्तिकारी संगठनों के माध्यम से क्रान्तिकारी आंदोलन की धारा प्रभावित हो चुकी थी। किन्तु पूर्वी उ0प्र0 में विप्लववादी दल की सीापना से क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में एक नए युग का प्रादुर्भाव हुआ। पूर्वी उत्तर प्रदेष क्रान्तिकारी आंदोलन का केन्द्र बन गया और धीरे–धीरे सम्पूर्ण उत्तर भारत इसके प्रभाव क्षेत्र में आ गया। पूर्वी उत्तर प्रदेष भी क्रांतिकारी आंदोलन की दृष्टि से महत्व रखता है विषेषकर विल्लववादी दर्शन, कार्य पद्धति, रीति–रिवाज और स्वरूप की दृष्टि से।

जहाँ तक छात्रों के योगदान की बाद है तो यह स्पष्ट है कि ऐसा कोई आंदोलन नहीं था जिनमें छात्र वर्ग की सक्रिय भागीदारी न हो। इनकी जो भी कार्य प्रणाली थी वह बहुत गुप्त होती थी व बहुत योग्य व गिने–चुने नवयुवक ही क्रांतिकारिें के संगठन में शामिल होते थे। पूर्वी उ0प्र0 मं जो भी क्रान्तिकारी छात्र रहे हैं वे इतिहास पुरूष बन गये। इनकी संख्या थोडी ही है। किन्तु जब भी इतिहास लिखा जाएगा इन्ही का नाम प्रमुख होगा। शचीन्द्र नाथ सान्याल के बनारस आने के बाद (1908 ई0) पूर्वी उत्तर प्रदेष में क्रान्तिकारी संगठन प्रारंभ हुआ। शचीन्द्रनाथ कलकत्ता से सीधे बनारस आए और बंगाली टोला हाईस्कूल में प्रवेश किए। उन्होंने कलकत्ता के अनुषीलन समिति के अनुरूप अनुशीलन समिति की स्थापना की परन्तु बंगाल के समिति से उसका कोई सम्बन्ध नहीं थी। यह समिति बनारस के मिसर पोखरा (लक्ष्मी कुण्ड) क्षेत्र में स्थापित था, वहाँ पर एक

11. Constituent Assembly of India : Constituent Assembly Debates (Proceedings) Vol-7, Nov-19,1948.
12. Mukharji, P. B. (1980): Place of Education under the Indian Constitution, a chepter cited in Shah, O. P. & Mukherji, Dhurjati (1980): India Today, Firma K.L.M. Private Limited, Calcutta, Page 56-70.
13. Mukharji, P. B. (1980): Place of Education under the Indian Constitution, Page 56-70.
14. Mukharji, P. B. (1980): Place of Education under the Indian Constitution, Page 56-70
15. Constitution of India (2002): with selective comments by P. M. Bakshi, Page ? .
16. Constitution of India (2002): with selective comments by P. M. Bakshi, Page ? .
17. Constitution of India (2002): with selective comments by P. M. Bakshi, Page ? .
18. Constitution of India (2002): with selective comments by P. M. Bakshi, Page ? .
19. Constituent Assembly of India: Constituent Assembly Debates (Proceedings), Vol-7, Nov-23, 1948.
20. विस्तार से देखें– http://www.education.nic.in/cd50years/g/12/Book12.htm
21. Govt. of India (1954): Report of the Committee on the Relationship between State Government and Local Bodies in the Administration of Primary Education, Publication No. 151, Ministry of Education, Delhi.
22. Govt. of India (1954): Report of the Committee on the Relationship between State Government and Local Bodies in the Administration of Primary Education, Page 24-39.
23. N.I.E.P.A. (2003): Implications of Elementary Education as a Fundamental Right, selected readings, 5-8 Aug, 2003, N.I.E.P.A., Delhi, Page 19.
24. CABE, 23rd meeting, 14-15 January, 1956, Delhi, विस्तार से देखें– http://www.education.nic.in/cd50years/g/12/26/toc.htm .
25. CABE, 24th meeting, 16-17 January, 1957, Delhi, विस्तार से देखें– http://www.education.nic.in/cd50years/g/12/25/toc.htm.
26. Govt. of India (1958): Report of the First Meeting of the All India Council for Elementary Education,10-11 March,1958, Publication No. 368, Ministry of Education, Delhi, Page 2 & 10.
27. Mukerji S. N. (1969): Education in India : Today and Tomorrow, Page 72.
28. The Delhi Primary Education Act -1960 : as cited in N.I.E.P.A. (2003): Implications of Elementary Education as a Fundamental Right, selected readings, 5-8 Aug, 2003, N.I.E.P.A., Delhi.
29. Shukla, P. D. (1983): .Administration of Education in India, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., Delhi, Page 36-37.
30. Shukla, P. D. (1983): .Administration of Education in India, Page 34-36.
31. Govt. of India (1958): Report of the First Meeting of the All India Council for Elementary Education, Page 87.
32. Mukerji S. N. (1969): Education in India : Today and Tomorrow, Page 72.
33. Govt. of India (1958): Report of the First Meeting of the All India Council for Elementary Education, Page 10.
34. CABE, 23rd meeting, 14-15 January, 1956, Delhi, विस्तार से देखें– http://www.education.nic.in/cd50years/g/12/26/toc.htm.
35. Naik, J. P.(1979): The National Education Policy 1947-1978, विस्तार से देखें– http://www.education.nic.in/cd50years/g/T/T/toc.htm.
36. CABE, 23rd meeting, 14-15 January, 1956, Delhi, Appendix P, विस्तार से देखें– http://www.education.nic.in/cd50years/g/12/26/toc.htm.